ISSN : 2320–1274

वेब अंक

www.notnul.com

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

अप्रैल-जून, 2026

मूल्य : 150 रुपये

अंक 111

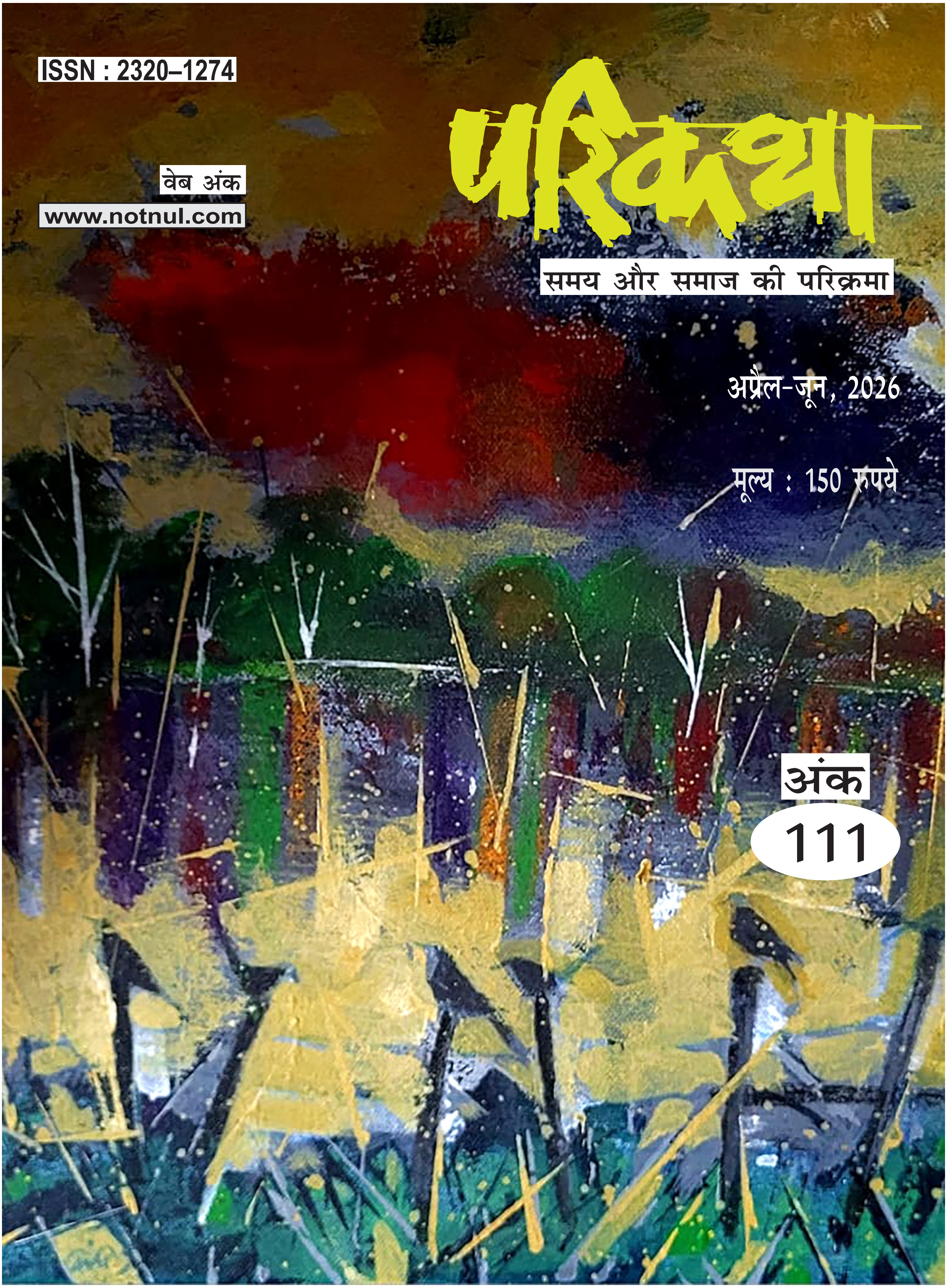

परिकथा-110

'परिकथा' पत्रिका का अंक 110 खास है क्योंकि इसमें सशक्त कहानियों की भरमार है। सब अलग रंग की जीवन और समाज को परिभाषित करती हैं। नर्मदेश्वर की 'आखिरी तीर' और नूर जहीन की 'भटकन', जीवन जगत पर मानवीय करुणा की अनिवार्यता जताती है; सुषमा मुनीन्द्र की कहानी 'बिल्ला नंबर 15' स्त्री कुली के बारे में नई जानकारियों से भरी हुई है। गजेंद्र रावत की कहानी 'जूनियर डॉक्टर' मन में अटक जाती है और कोविड काल में डॉक्टरों की मजबूरियों की याद दिलाती है। महावीर राजी की 'ये फुटकर लोग' तथा राजेन्द्र लहरिया की 'जनमरीचिका' आज के क्रूर समय को रेखांकित करती हैं। शैलेन्द्र शांत की 'साईकल' उनके किशोर वय की उमंग पर केंद्रित है। लेकिन अंक की सबसे शानदार कहानी धनंजय चोपड़ा की लगी, 'इत्ती सी जिन्दगी'। हर पुस्तक प्रेमी को यह कहानी पढ़नी चाहिए। हम लिखने पढ़ने की दुनिया के लोग वस्तुओं पर, विकारों पर, फैशन पर, राजनीति पर लिखते रहते हैं जबकि हमारा अस्तित्व किताबों से है। बुक स्टोर के मालिक अग्रवाल साहब और उनका नियमित ग्राहक/गुणग्राहक लल्ला बाबू के बीच मौन मानीय रिश्ते की डोर जाने कितने पुस्तक प्रेमियों की याद दिलाती है। वे एक कोने में खड़े खड़े किताबें पलटते हैं। अब यह पढ़ने की संस्कृति विलुप्त होती जा रही है या पुस्तक स्टोर ही बन्द होते जा रहे हैं। कहानी एक भावुक क्षण पर समाप्त होती है। अग्रवाल साहब जितनी मानवता अब कम दिखाई देती है लेकिन इसके होने को खारिज नहीं किया जा सकता। लेखक धनंजय चोपड़ा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में हैं जो एक समय 'बरगद' जैसी यादगार पत्रिका निकाल चुके हैं जिन्हें न कभी लिखने की उतावली रही, न छपने की। खालिस इलाहाबादी हैं, खरामा खरामा जीने वाले।

संपादक शंकर जी का संपादकीय भी इन्हीं सवालों से टकराता है। यह इत्तेफाक है कि दो सुदूर बैठे लोग एक ही समस्या पर चिंतित हैं।

अंक में स्मृति लेख भी रूटीन से हट कर हैं। हरियश राय और कमलेश ने अवधेश प्रीत को याद किया है। कुमारी उर्वशी ने खगेन्द्र ठाकुर को और स्मृति शुक्ल ने ज्ञानरंजन को। स्मृति को एक संशोधन करना होगा। उनकी कलम जरा सी फिसल गई है। ज्ञान जी के गुरु जगदीश गुप्त रहे होंगे, जगदीश चतुर्वेदी नहीं।

कविताएँ भी समर्थ हैं-सुभाष राय, स्वप्निल श्रीवास्तव, गोविंद माथुर, ज्योतिकृष्ण वर्मा। किसको छोड़ें, सभी के कथ्य और शिल्प में मौलिकता है।

बहुत मेहनत और सूझ बूझ से बनता है ऐसा विशेष अंक।

सप्ताह भर से पढ़ रही हूँ। अभी भी बहुत शेष है।

–ममता कालिया
बी-3ए/3/3, अंसल एक्वापोलिस
एनएच-24, धुंनदहेरा, गाजियाबाद-201016
मो.: 9212741322

वर्तमान परिदृश्य का एक सशक्त और प्रतिनिधि दस्तावेज

चंद्रबिंद

यह पत्रिका 'परिकथा' (जनवरी- मार्च 2026, अंक 110) हिंदी साहित्य की एक गंभीर और विचारोत्तेजक पत्रिका के रूप में सामने आती है। 'समय और समाज की परिक्रमा' जैसे अर्थपूर्ण शीर्षक अपने आप में इस बात का संकेत देता है कि पत्रिका समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक मुद्दों को गहराई से समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास करती है।

सबसे पहले यदि हम पत्रिका की संरचना पर ध्यान दें, तो यह काफी व्यवस्थित और संतुलित दिखाई देती है। संपादकीय मंडल में अनुभवी और विद्वान व्यक्तियों का समावेश है, जो पत्रिका की गुणवत्ता और गंभीरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संपादक शंकर के नेतृत्व में पत्रिका का संपादन सुसंगत और प्रभावशाली प्रतीत होता है। विभिन्न खंड-जैसे आलोचनात्मक टिप्पणियाँ, लेख, श्रद्धांजलि, सृजन, व्यक्तित्व और किताब का समावेश इसे बहुआयामी बनाते हैं।

लेख खंड इस पत्रिका की सबसे सशक्त कड़ी है। 'हिंदी व उर्दू के रिश्तों पर एक नजर' जैसे लेख साहित्यिक समन्वय और सांस्कृतिक एकता की भावना को प्रकट करते हैं। यह लेख न केवल भाषा के स्तर पर, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में भी हिंदी और उर्दू के संबंधों को समझने का प्रयास करता है। लेखक की भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली है, जो पाठकों को विषय के साथ जोड़कर रखती है।

श्रद्धांजलि खंड में 'ज्ञानरंजन' जैसे साहित्यकार को याद किया गया है। यह खंड भावनात्मक और सम्मानजनक शैली में लिखा गया है, जो साहित्यिक परंपरा और विरासत को जीवित रखने का कार्य करता है। इस प्रकार के लेख पाठकों को साहित्य के महान व्यक्तित्वों के योगदान से अवगत कराते हैं और प्रेरणा प्रदान करते हैं। 'तारामंडल के नीचे...' जैसी रचनाएँ कल्पना और संवेदना का अद्‌भुत मेल प्रस्तुत करती हैं। इन रचनाओं में भाषा की सहजता और भावों की गहराई पाठकों को आकर्षित करती है। यह खंड युवा और स्थापित दोनों प्रकार के लेखकों को मंच प्रदान करता है, जो पत्रिका की एक बड़ी विशेषता है।

व्यक्तित्व खंड में 'स्वप्न, संघर्ष और प्रतिबद्धता का समुच्चय: हमारे खगेंद्र ठाकुर' जैसे लेख किसी व्यक्ति विशेष के जीवन, संघर्ष और उपलब्धियों को उजागर करते हैं। यह खंड प्रेरणादायक होने के साथ-साथ समाज में सकारात्मक मूल्यों को स्थापित करने का कार्य करता है।

'किताब' खंड में पुस्तक समीक्षा के माध्यम से साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। डॉ. शंभुनाथ के कविता-सग्रह 'ईश्वर का दुख' जैसी पुस्तक पर आधारित समीक्षा पाठकों को नई पुस्तकों के बारे में जानकारी देती है और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह खंड साहित्यिक जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रस्तुति की दृष्टि से भी पत्रिका संतुलित और आकर्षक है। विभिन्न खंडों का स्पष्ट विभाजन, शीर्षकों का उचित प्रयोग और सामग्री का क्रमबद्ध आयोजन इसे पढ़ने में सहज बनाता है। हालांकि यदि चित्रों या ग्राफिक्स का थोड़ा और समावेश किया जाए तो यह और अधिक आकर्षक बन सकती है।

समग्र रूप से देखा जाए तो 'परिकथा' का यह अंक साहित्य, समाज और समय के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करता है। यह न केवल पाठकों को ज्ञान और विचार प्रदान करता है, बल्कि उन्हें सोचने और समझने के लिए प्रेरित भी करता है। इसमें समकालीन मुद्दों पर गहन दृष्टि, साहित्यिक संवेदना और रचनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

इस अंक की सामग्री अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। इसमें कविता, कहानी, संस्मरण, लेख, साक्षात्कार और आलोचनात्मक लेखन का संतुलित समावेश है, जो पाठकों को एक व्यापक साहित्यिक अनुभव प्रदान करता है। संपादकीय दृष्टि स्पष्ट रूप से यह दिखाती है कि पत्रिका केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के ज्वलंत मुद्दों पर भी गंभीर विमर्श करना चाहती है।

'कहानी' खंड इस अंक का प्रमुख आकर्षण है। इसमें शामिल कहानियाँ आम जीवन की सच्चाइयों को बेहद संवेदनशील और यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत करती हैं। विशेष रूप से अस्पताल, गरीबी, सामाजिक असमानता और मानवीय रिश्तों के द्वंद्व पर आधारित कहानियाँ पाठक को झकझोरती हैं। लेखकों ने पात्रों के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि आधुनिक व्यवस्था में इंसान कैसे संवेदनहीनता और संघर्ष के बीच जी रहा है। इन कहानियों की भाषा सहज, प्रभावशाली और भावनात्मक रूप से जुड़ाव पैदा करने वाली है।

'कविता' खंड भी उतना ही सशक्त है। इसमें सुभाष राय, स्वप्निल श्रीवास्तव, शहंशाह आलम, गोविंद माथुर जैसे विभिन्न कवियों की रचनाएँ जीवन के विविध

पक्षों को छूती हैं-प्रेम, पीड़ा, संघर्ष, आशा और सामाजिक यथार्थ। कविताओं में प्रतीकों और बिंबों का सुंदर प्रयोग किया गया है, जो पाठक को गहरे चिंतन की ओर प्रेरित करता है। कुछ कविताएँ व्यक्तिगत अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, तो कुछ सामाजिक विसंगतियों पर तीखा प्रहार करती हैं। इस प्रकार, कविता खंड भाव और विचार दोनों स्तरों पर प्रभावशाली है।

लेख और विचार खंड में समकालीन मुद्दों पर गंभीर चर्चा की गई है। यहाँ साहित्य, समाज और संस्कृति के बदलते स्वरूप पर विचार किया गया है। लेखकों ने अपने लेखों में तार्किकता और संवेदनशीलता का संतुलन बनाए रखा है, जिससे पाठक को नए दृष्टिकोण मिलते हैं। यह खंड विशेष रूप से उन पाठकों के लिए उपयोगी है जो साहित्य को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते हैं।

'साक्षात्कार' और 'संवाद' भी इस अंक की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसमें विभिन्न साहित्यकारों और विचारकों के साथ बातचीत के माध्यम से उनके अनुभव, विचार और रचनात्मक दृष्टिकोण को सामने लाया गया है। ये साक्षात्कार न केवल प्रेरणादायक हैं, बल्कि साहित्य की आंतरिक प्रक्रिया को समझने में भी सहायक हैं।

संस्मरण और श्रद्धांजलि खंड में भावनात्मक गहराई देखने को मिलती है। यहाँ प्रस्तुत रचनाएँ स्मृतियों के माध्यम से जीवन के उन पहलुओं को उजागर करती हैं, जो अक्सर हमारी दिनचर्या में छूट जाते हैं। इन रचनाओं में आत्मीयता और सादगी का सुंदर संगम है, जो पाठक के मन को छू जाता है।

हालाँकि कुछ स्थानों पर सामग्री की अधिकता के कारण पाठक को एकाग्रता बनाए रखने में थोड़ी कठिनाई हो सकती है। यदि संपादन में थोड़ी और कसावट लाई जाए, तो यह पत्रिका और भी प्रभावशाली बन सकती है।

समग्र रूप से, 'परिकथा' का यह अंक हिंदी साहित्य के वर्तमान परिदृश्य का एक सशक्त और प्रतिनिधि दस्तावेज है। यह न केवल साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी है, बल्कि उन सभी पाठकों के लिए भी महत्वपूर्ण है, जो समाज और समय को समझना चाहते हैं। यह अंक पाठक को सोचने, महसूस करने और आत्ममंथन करने के लिए प्रेरित करता है।

अंततः कहा जा सकता है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल है और हिंदी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने में सक्षम है। यह अंक निश्चित रूप से संग्रहणीय है और बार-बार पढ़े जाने योग्य है।

अंत में कहा जा सकता है कि यह पत्रिका हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह न केवल साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी है, बल्कि शोधार्थियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भी एक मूल्यवान संसाधन है।

'जूनियर डॉक्टर' गजेन्द्र रावत की यह कहानी मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक व्यवस्था की सच्चाइयों को उजागर करती है। कहानी का कथानक अस्पताल के वातावरण के इर्द-गिर्द घूमता है, जहाँ एक छोटे बच्चे की गंभीर स्थिति के माध्यम से स्वास्थ्य व्यवस्था की खामियों और मानवता के द्वंद्व को दर्शाया गया है। लेखक ने डॉक्टर, नर्स और आम लोगों के व्यवहार के जरिए यह दिखाया है कि कैसे कर्तव्य और संवेदना के बीच संघर्ष चलता रहता है।

कहानी में भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है, जो पाठक को भावनात्मक रूप से जोड़ती है। विशेष रूप से डॉक्टर कबीर का चरित्र संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रतीक बनकर उभरता है। कहानी का संदेश स्पष्ट है कि केवल नियमों का पालन ही नहीं, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण भी आवश्यक है। समग्र रूप से, यह कहानी समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है और मानवीय मूल्यों की महत्ता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।

कहानी 'आखिरी तीर' ग्रामीण और आदिवासी जीवन की संवेदनशील झलक प्रस्तुत करती है। इसमें परंपराओं, रिश्तों और भावनाओं को सरल लेकिन प्रभावशाली भाषा में दिखाया गया है। कहानी में दुल्हन, कुम्हार और राजकुमार के माध्यम से मानवीय संवेदनाएँ, वचनबद्धता और त्याग को उभारा गया है। विशेष रूप से 'सुग्गा' के प्रसंग में प्रेम और लगाव की गहराई स्पष्ट होती है। अंत भाग में पहाड़ी और घटना का वर्णन कहानी को मार्मिक बना देता है। लेखक ने सामाजिक मान्यताओं और मानवीय मूल्यों का सुंदर समन्वय किया है। कुल मिलाकर यह कहानी भावनात्मक और प्रभावशाली है।

राजेन्द्र लहरिया की कहानी 'जनमरीचिका' एक विचारोत्तेजक और यथार्थपरक रचना है, जो आधुनिक जीवन की चमक-दमक और उसके पीछे छिपे भ्रम को उजागर करती है। इस कहानी में लेखक ने टीवी, उपभोक्तावाद और सफलता के दिखावे से प्रभावित व्यक्ति की मानसिकता को बारीकी से दर्शाया है।

कहानी का मुख्य पात्र जग्गी, एक साधारण युवक है जो टीवी पर दिखने वाली दुनिया से प्रभावित होकर वास्तविकता से दूर होता जाता है। उसे लगता है कि जीवन में सब कुछ आसान और आकर्षक है, जबकि सच्चाई इससे बिल्कुल अलग होती है। लेखक ने 'मरीचिका' (मृगतृष्णा) के प्रतीक के माध्यम से यह दिखाया है कि इंसान अक्सर भ्रम में फँसकर अपने मूल्यों और वास्तविक जरूरतों को भूल जाता है।

भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और प्रभावशाली है, जिससे पाठक आसानी से कहानी से जुड़ जाता है। यह कहानी हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हम किस हद तक दिखावे और झूठी चमक के पीछे भाग रहे हैं। कुल मिलाकर, 'जनमरीचिका' एक सार्थक और शिक्षाप्रद कहानी है, जो आज के समाज की सच्चाई को उजागर करते हुए हमें जागरूक रहने की प्रेरणा देती है।

❑ ❑ ❑

चन्द्रबिंदु

कवि एवं आलोचक
फ्लैट नं. 304, ब्लॉक-सी, श्री गणेश विहार
अपार्टमेंट, नेहरू नगर, गांधी पथ, पटना-800013
(बिहार)
मो.: 9631074501
ई-मेल: chandrabindsingh@gmail.com

'परिकथा' का 110वां अंक : समाज से गहरा रिश्ता

डॉ. शाहीन सबा

पत्रिका के सांपादक वरिष्ठ साहित्यकार शंकर का संपादकीय 'किताबें' आज के डिजिटल समय में अपना एक अलग महत्व रखता है। यह लेख समाज में किताबों के महत्व और उनकी घटती/बदलती स्थिति पर केंद्रित है।

किताबें हमेशा से सभ्य, सुसंस्कृत और विकसित समाज की पहचान रही हैं। जहाँ किताबों का अधिक प्रसार होता है, वह समाज उतना ही बौद्धिक रूप से समृद्ध होता है। उदाहरण के रूप में बंगाल का उल्लेख है, जहाँ आज भी पढ़ने की संस्कृति जीवित है।

साहित्य से जुड़े लोग भी अब व्यापक पढ़ाई नहीं कर रहे। कुछ समस्याएँ बतायी गयी हैं। पढ़ना केवल आवश्यकता या संबंध तक सीमित हो गया है।

संपादक ने कुछ सुझाव भी दिए हैं, जिनके पास किताबें हैं, वे दूसरों में पढ़ने की रुचि जगाएँ। लोग अपनी आय का एक हिस्सा किताबें खरीदने में लगाएँ। लेखक भी अन्य लेखकों को पढ़ें।

'किताबें' शीर्षक संपादकीय समकालीन समाज में पठन-संस्कृति के क्षरण और किताबों के महत्व को केंद्र में रखकर लिखा गया एक विचारोत्तेजक संपादकीय लेख है।

संपादकीय लेख का अंत बहुत प्रभावशाली है, यह लेख को प्रभावशाली समापन देता है। 'किताबें हमारी साँसें हैं, हमारी धड़कनें हैं।

प्रस्तुत अंक में कुल सोलह कहानियाँ सम्मिलित हैं। कृशनचंदर की उर्दू कहानी 'आधे घंटे का खुदा' का हिन्दी अनुवाद खुर्शीद आलम ने किया है।

यह कहानी एक सैनिक कासिर के इर्द-गिर्द घूमती है जिसे अपने कर्तव्य के तहत एक गाँव पर नजर रखनी है। वह ऊँचाई पर बैठा है और नीचे गाँव, जंगल और लोगों को देख रहा है। इसी दौरान उसकी नजर एक स्त्री (मोंगरी) पर पड़ती है, जो उसके भीतर मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम और करुणा जगाती है। धीरे-धीरे उसके भीतर कर्तव्य (हिंसा-आदेश) और मानवता (प्रेम/करुणा) का द्वंद्व गहराता जाता है। अंतत: वह उस स्त्री के प्रति आकर्षण और संदेवना के कारण अपने सैन्य कर्तव्य से विचलित होता है। स्त्री-विमर्श की दृष्टि से अगर देखा जाए तो मोंगरी यहाँ केवल प्रेमिका नहीं, बल्कि मानवता और जीवन की प्रतिनिधि है। वह पुरुष सत्ता (सैनिक/युद्ध) के बीच जीवन, संवेदना और सहजता का प्रतीक बनती है। परंतु ध्यान देने योग्य है कि उसकी भूमिका सीमित है-वह कथा को दिशा देती है, पर अपनी स्वतंत्र आवाज कम रखती है। यह पारंपरिक कथा-रचना में स्त्री की प्रेरक लेकिन गौण उपस्थिति को दिखाता है।

अगली कहानी 'जनमरीचिका' राजेन्द्र लहरिया की है। यह कहानी एक युवक जग्गी और उसके अनुभवों के माध्यम से आधुनिक समाज की भ्रामक दुनिया (illusion) को दिखाती है। 'धन' और 'सफलता के शॉर्टकट' एक भ्रम हैं। वास्तविक जीवन में संस्कार, नैतिकता और सच्चाई आधिक महत्वपूर्ण हैं।

'जनमरीचिका' एक ऐसी कहानी है जो दिखाती है कि झूठे सपने (illusion) इंसान को वास्तविक से दूर कर देते हैं। धन की अंधी दौड़ व्यक्ति को अपराध की ओर ले जा सकती है। समाज में सबसे बड़ा संकट है : 'इंसान' का

'धनवान' में बदल जाना।

प्रगति गुप्ता की लिखी कहानी 'दहशत' मुझे पसंद आई। यह कहानी एक ऐसी स्त्री (तन्वी) के अनुभवों के माध्यम से भय, असुरक्षा और सामाजिक सच्चाईयों को उजागर करती है। अस्पताल जैसे सुरक्षित माने जाने वाले स्थान में भी उसके मन में दहशत घर कर जाती है। अचानक घटित घटनाएँ, अंधविश्वास और सामाजिक परिस्थितियाँ उसके भीतर भय को और गहरा करती हैं।

चारुमित्रा की कहानी 'अमरूद का पेड़' भी बहुत अच्छी कहानी है। इस कहानी में पेड़ के महत्व को दर्शाया गया है कि कैसे ग्रामीण परिवेश में हमें पेड़ लगाने की जरूरत है। वो घर की जड़ को मजबूती से बाँध कर रखता है। उजड़ते वन, कटते वृक्ष, सूखते झरने, विस्थापित जनजातियाँ सब मौन क्रंदन करते रहते हैं। कहानी में एक व्यक्ति ट्रेन में सफर करते हुए अपने अतीत को याद करता है। उसे अपने घर, पिता और बचपन की बातें याद आती हैं। खासकर अमरूद का पेड़ उसके बचपन की खुशियाँ और पिता के प्रेम का प्रतीक है। पिता ने उसे बचपन में लगाया था और उससे भावनात्मक जुड़ाव था। समय के साथ परिस्थितियाँ बदल जाती हैं-घर, पेड़ और रिश्तों में भी बदलाव आता है। अंत में कहानी एक गहरी भावना छोड़ती है-प्रकृति, यादें और परिवार का महत्व।

बंशीलाल परमार की कहानी 'अटैचमेंट' एक शिक्षक के अनुभवों पर आधारित है, जिसमें शिक्षा व्यवस्था की सच्चाई और उसमें मौजूद समस्याओं को दिखाया गया है। कहानी का मुख्य पात्र एक शिक्षक है, जिसे 'अटैचमेंट' (दूसरे स्कूल/कार्यालय में अस्थायी नियुक्ति) पर भेजा जाता है। शुरूआत में वह आदर्शों और ईमानदारी के साथ काम करना चाहता है, लेकिन धीरे-धीरे उेस सिस्टम की सच्चाई समझ आने लगती है। शिक्षा विभाग में काम से ज्यादा औपचारिकताएँ और दिखावा होता है। अधिकारी और कर्मचारी अक्सर जिम्मेदारी से बचते हैं। शिक्षक को पढ़ाने से ज्यादा कागजी काम में उलझाया जाता है।

नर्मदेश्वर की कहानी 'आखिरी तीर' एक अत्यंत संवेदनशील और प्रतीकात्मक कहानी है, जो आदिवासी जीवन, प्रकृति और मानवीय बदलाव को केंद्र में रखती है। कहानी एक आदिवासी दंपत्ति-वीरसाय और उसकी पत्नी के जीवन के माध्यम से आगे बढ़ती है। वीरसाय पहले एक कुशल शिकारी होता है। वह वीर-कमान से शिकार करके अपना जीवन यापन करता है। शादी के बाद उसकी उत्नी उसे समझाती है कि अनावश्यक हिंसा ठीक नहीं है। धीरे-धीरे 'वीरसाय' के परिवर्तन आता है। वह शिकार छोड़ने की ओर बढ़ता है। एक महत्वपूर्ण प्रसंग में वह शिकार करने जाता है, लेकिन उसकी पत्नी उसे रोकती है और समझाती है कि पक्षियों का भी जीवन होता है। उन्हें मारना क्रूरता है। जंगल और प्रकृति के साथ संतुलन जरूरी है। अंततः वीरसाय अपने जीवन का 'आखिरी तीर' चलाता है जो केवल शिकार का अंत नहीं, बल्कि उसके भीतर के हिंसक स्वभाव का अंत है। 'आखिरी तीर' केवल एक तीर नहीं है, बल्कि एक प्रतीक है-हिंसा से अहिंसा की ओर परिवर्तन, आदिवासी जीवन में चेतना और संवेदना का जागरण, मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन।

यह कहानी 'आखिरी तीर' (नर्मदेश्वर) केवल एक साधारण आदिवासी जीवन-चित्र नहीं है, बल्कि गहरे स्पर मानवीय चेतना, प्रकृति-संबंध और स्त्री-प्रभाव की बहुआयामी व्याख्या प्रस्तुत करती है। वीरसाय का चरित्र आदिवासी जीवन की परंपरागत शिकार-प्रधान संस्कृति का प्रतिनिधि है। लेकिन यह कथा उस परंपरा को महिमामंडित नहीं करती, बल्कि उसकी सीमाओं को उजागर करती है। कहीं-कहीं यह भी लगता है कि स्त्री की भूमिका केवल 'प्रेरक' तक सीमित कर दी गई है, जिससे उसकी स्वतंत्र पहचान थोड़ी सीमित हो जाती है।

'मैं बोधिवृक्ष हूँ' अशोक शाह द्वारा लिखित रचना एक प्रतीकात्मक एवं दार्शनिक कथा के रूप में सामने आती है, जिसमें 'बोधिवृक्ष' को केंद्र में रखकर जीवन, ज्ञान और मानवीय अनुभवों की गहराई को व्यक्त किया गय है। रचना का मूल विषय आत्मबोध, ज्ञान और जीवन की निरंतरता है। बोधिवृक्ष यहाँ सिर्फ एक पेड़ नहीं, बल्कि: अनुभवों का साक्षी मानव जीवन का दर्पण आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक बन जाता है।

प्रस्तुत अंक में स्वप्निल श्रीवास्तव की कई कविताएँ हैं-जैसे 'अगर', 'सिक्कों की बारिश', 'जब तुम', 'अनुभव', 'मसखरे' और 'बाजार समय में'।

'अगर'-यह कविता आत्मस्वीकृति (self-reflection) पर आधारित है।

'सिक्कों की बारिश' - यह कविता बचपन की स्मृतियों और पिता के संघर्ष को दर्शाती है। पिता की जेब से गिरते सिक्के बच्चों के लिए खुशी का प्रतीक थे। उन सिक्कों को आवाज में जीवन की कठिनाई भी छिपी थी।

'मसखरे'-यह कविता समाज और सत्ता पर व्यंग्य है। जो लोग मजाक करते हैं, वे अक्सर गंभीरता से नहीं लिए जाते। सत्ता को खुश करने वाले लोग (चापलूस) आगे बढ़ जाते हैं। सच्चाई बोलने वालों को दंड मिलता है।

'बाजार समय में' यह कविता आधुनिक उपभोक्तावादी समाज (consumerism) पर आधारित है।

मणिपुर पर केन्द्रित भरत प्रसाद की कविताएँ ध्यान खीचती हैं। 'परिकथा' विशेष रूप से झारखंड की रचनाशीलता को सामने लाने में एक सशक्त भूमिका निभा रही है।

□□□

डॉ. शाहीन सबा

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।
आकाशवाणी राँची से गजलों का प्रसारण।
संप्रति: असिस्टेंट प्रोफेसर

संपर्क
हिन्दी विभाग, डोरंडा महाविद्यालय
राँची (झारखंड)
ई-मेल: shahinsaba22@gmail.com

हिंदी व उर्दू के रिश्तों पर एक नजर

सुमसुमी बोरा

प्रस्तुत लेख डॉ. जानकीप्रसाद शर्मा द्वारा रचित है, जिसका शीर्षक हैं हिंदी व उर्दू के रिश्तों पर एक नजर। यह लेख परिकथा के सितंबर-अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर 2025 में प्रकाशित है।

यह लेख भाषा, साहित्य और संस्कृति के धरातल पर हिंदी और उर्दू के अटूट संबंधों की एक गहरी और विद्वतापूर्ण पड़ताल करता है।

लेखक का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि हिंदी और उर्दू दो अलग-अलग भाषाएं नहीं; बल्कि एक ही भाषाई विरासत की दो शाखाएँ हैं। लेखक ने इस मिथक को तोड़ा है कि उर्दू का जन्म फारसी से हुआ है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि उर्दू की जड़े, अरबी-फारसी में नहीं, बल्कि भारतीय देशी भाषा परंपरा और शौरसेनी अपभ्रंश में हैं। वे खुसरो को हिंदी और उर्दू दोनों का साझा पूर्वज मानते हैं, जिन्होंने हिंदी का साहित्यिक बीज बोया।

लेख में स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी और उर्दू का व्याकरण, क्रियाएँ, सर्वनाम आदि एक जैसा है। गालिब के शेरों का उदाहरण देते हुए बताया गया है कि शब्द भले ही फारसी के हों, पर क्रिया हिंदी की ही रहती है। यथा- गालिब का यह शे'र देखिए-

'शुमारे-सब्हा मरगूबे-बुत्ते-मुश्किल पसंद आया' इस शे'र के 'सारे अल्फाज सिवाय क्रिया के फारसी के हैं। लेकिन क्रिया को न बदला जा सका। ऐसी सूरत में कह सकते हैं कि उर्दू की अस्ल हिंदी है।' (फिक्रे बलीग, हिस्सा अब्बल, 1928)

लेखक ने दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले शब्द-युग्मों का उदाहरण देते हुए यह बताया है कि हिंदी और उर्दू के शब्द एक दूसरे में रचे-बसे हैं। श्रोजी-रोटीश श्बेटी-दामादश 'शादी-ब्याह', दाना-पानी जैसे शब्दों में एक शब्द फारसी का है तो दूसरा शब्द संस्कृत अथवा हिंदी का। हवा चल रही है अथवा देर आए दुरुस्त आएश जैसे मुहावरों के बिना हिंदी की कल्पना करना भी मुश्किल है। लेखक का मानना है कि दोनों भाषाओं का रिश्ता 'आत्मीय आपसदारी' का हैं, जिसे राजनीतिक कारणों से अलग करने की कोशिश की गई।

डॉ. शर्मा ने हिंदी और उर्दू के इतिहास लेखकों की आलोचनात्मक समीक्षा की हैं। उन्होंने रामचंद्र शुक्ल जैसे दिग्गज इतिहासकारों का जिक्र करते हुए बताया कि कैसे हिंदी साहित्य के इतिहास में उर्दू के महान कवियों को हाशिए पर रखा गया। शुक्ल जी की दृष्टि केवल 'नजीर' और 'सौद' के उल्लेख तक सीमित रही है। उन्होंने अपने समकालीन 'इकबाल' का नामोल्लेख भी जरूरी नहीं समझा है।

लेखक का मानना है कि अमीर खुसरो दोनों भाषाओं के पूर्वज हैं। उर्दू शायर भारतेन्दु 'रसा' ने आधुनिक हिंदी साहित की नींव डाली। लेखक का मानना है कि जब तक हम दोनों भाषाओं को एक-दूसरे के सापेक्ष नहीं देखेंगे, तब तक भारतीय साहित्य की समझ विकसित नहीं होगी। साझा साहित्येतिहास लिखे जाने की आवश्यकता है, जिसका सपना प्रेमचंद और कमलेश्वर जैसे साहित्यकारों ने भी देखा था।

लेख का एक बड़ा हिस्सा इस बात पर केंद्रित है कि उर्दू को केवल एक धर्म से जोड़ना, एक अवैज्ञानिक-नजरिया है। उर्दू केवल मुसलमानों की भाषा नहीं है। भारत के विभिन्न प्रांतों (तामिलनाडु, केरल,

सुमसुमी बोरा

हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय
अरुणाचल प्रदेश
मो.: 8318267725

कर्नाटक, गुजरात) के मुसलमान अपनी क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते हैं, न कि केवल उर्दू। लेखक बताता है कि पंडित दयाशंकर 'नतीम' और ब्रज नारायण 'चकवस्त' जैसे हिंदू रचनाकारों ने उर्दू साहित्य को समृद्ध किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा का संबंध भूगोल और संस्कृति से अधिक है, धर्म से कम।

लेखक ने 'लिपि' को लेकर होने वाले विवादों पर भी अपना विचार व्यक्त किया है। लेखक का तर्क है कि लिपि बदलने से भाषा नहीं बदलती। उर्दू के लिए प्रयुक्त 'नस्तालीक' अब विदेशी नहीं रह गई है। वह भारतीय मानस में रची-बसी है। वे इस बात पर जोर देते हैं कि 'लिपि की रक्षा करना सांस्कृतिक जरूरत है लेकिन साथ ही हिंदी-उर्दू की दूरियाँ मिटाने के लिए साहित्य का लिप्यांतरण भी जरूरी है। हाँ, जानकीप्रसाद शर्मा का यह लेख केवल एक भाषाई विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह भारत की साझा संस्कृति का दस्तावेज है। यह लेख पाठकों को संकुचित सांप्रदायिक कष्टिकोण से ऊपर उठकर भाषा को मानवीय और सांस्कृतिक विरासत के रूप में देखने की प्रेरणा देता है।

❑ ❑ ❑

वेब अंक
www.notnul.co

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वर्ष 21 अंक 111, अप्रैल-जून, 2026

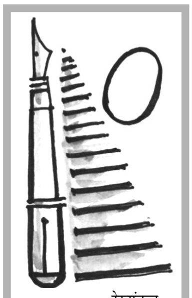

रेखांकन:
सुषमा सिन्हा

सौजन्य-सपादक
अरुण कुमार • अशोक शाह
धनेशदत्त पांडेय • राजेंद्र श्रीवास्तव
अनवर सुहैल • दिनेश अग्रवाल

संपादक-मंडल
डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह
हरियश राय
महेश दर्पण
सूर्यनाथ सिंह

संपादक
शंकर

संपर्क सूत्र
102, बुडबरी टावर
चार्मवुड विलेज
सूरजकुंड रोड,
नई दिल्ली-फरीदाबाद बॉर्डर-121009

दूरभाष
सम्पादकीय/ व्यवस्थापकीय 09431336275
08826011824
कार्यालय (0129) 4116726
email : parikatha.hindi@gmail.com

संयुक्त संपादक
अरविंद कुमार सिंह

संपादन-सहयोगी
अजय मेहताब
रवि कुमार

कला : जयंत
कानूनी सलाह : उत्कर्ष

क्षेत्रीय समन्वयक
अवधेश द्विवेदी

आलोचनात्मक टिप्पणियाँ

- वर्तमान परिदृश्य का एक सशक्त और प्रतिनिधि दस्तावेज — चंद्रबिंद 2
- परिकथा का 110वां अंक समाज से गहरा रिश्ता — डॉ. शाहीन सबा 4
- हिंदी व उर्दू के रिश्तों पर एक नजर — सुमसुमी बोरा 6

सम्पादकीय

मिनाब की बच्चियाँ 10

जन्मशती विशेष

- नामवर की विचार यात्रा — अरुण कुमार 13
- नामवर सिंह की वाचिक आलोचना और मूल्यांकन के प्रतिमान — मृत्युंजय सिंह 22
- एक अचूक पहचान के आगे समीक्षा के सैकड़ों सिद्धान्त फीके हैं — पूनम सिंह 26

कविताएँ

कैसा इतिहास? — शैलेन्द्र चौहान 31

कविताएँ

सबसे खूबसूरत आदमी — सुधांशु कुमार मालवीय 35

परिदृश्य

हाल-फिलहाल के उपन्यास : उपन्यासकारों से बातचीत

- लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार-कथाकार संजीव से अजय महताब की बातचीत 40
- उपन्यास लेखिका गरिमा श्रीवास्तव से प्रज्ञा की बातचीत 44
- योगिता यादव से जितेन्द्र बिसारिया की बातचीत 52

लेख

आदिवासी आंदोलन, हिंदी साहित्य और इतिहास की समस्याएँ — राकेश कुमार सिंह 57

चौपाल

ग्रह-शांति — नर्मदेश्वर 61

कहानियाँ

बाबा नूर	अहमद नदीम कासमी अनु.: *जाहिद खान • इशरत ग्वालियरी*	*66*
गले का हार	तरसेम गुजराल	68
नीला बहेड़ा	अशोक शाह	74
बंधुए	सूर्यनाथ सिंह	79
बंदूक	आदित्य अभिनव	86
ब्रह्मजाल	संजय कुमार सिंह	92
मिड डे मील	जनार्दन	97
अपनत्व	गंभीर सिंह पालनी	101
मुक्ति	कमलेश	104
पोथी पढ़ि पढ़ि	मुकुल जोशी	110
अँधेरे में तस्वीर	गोविन्द सेन	114
साड़ियाँ	गंगाधर चाटे	114
बटर ब्रेड	इमतियाज गदर	122
पानी का टैंकर	टी. श्रीनिवास	126
चित्रहार	महेन्द्र तिवारी	130

कविताएँ

मजदूर बस्ती से उठती सुगंध	अनिल गंगल	132
लौटने की कोई तारीख	अनवर शमीम	133
झेलना	शिरोमणि महतो	135
दुख और स्त्रियाँ	सुषमा सिन्हा	136
प्राण-प्रतिष्ठा के बाद	देवेश पथसरिया	139
शिकायत	खेमकरण 'सोमन'	140

'परिकथा' के सदस्यों तक पत्रिका नहीं पहुँच पाने की शिकायतों के बीच यह निर्णय लिया गया है कि 'परिकथा' अब सामान्य डाक से नहीं, सिर्फ रजिस्टर्ड डाक से भेजी जायेगी। सदस्यता शुल्क निम्नवत होगा :

दस अंकीय सदस्यता	1500/-
डाक खर्च	500/-
पाँच अंकीय सदस्यता	750/-
डाक खर्च	250/-

सौजन्य सदस्यता : 10,000 रुपये

यह अंक : 150 रुपये

सभी भुगतान चेक या ड्राफ्ट से या फिर सीधे 'परिकथा' एकाउंट में हो :

PARIKATHA
Aèkc No. : 50200010771980
Charmwood Village, Surajkund Road
Faridabad-121009
RTGS èk NEFT èk IFSC : HDFC 0000396

संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यवसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।

रमाशंकर प्रसाद द्वारा डॉलफिन प्रिन्टो ग्राफिक्स, 4-ई/7, पाबला बिल्डिंग, झण्डेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110055 से मुद्रित कराकर 102, बुडबरी टावर चार्मवुड विलेज, सूरजकुंड रोड, नई दिल्ली-फरीदाबाद बॉर्डर-121009 से प्रकाशित।

'परिकथा' में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं।

मौजूदा पता का समावेश और पत्रिका की त्रैमासिक प्रकाशन अवधि आवेदित

मुसहर... योगेंद्र पांडेय 142
बुद्ध और युद्धकामी अनिता रश्मि 144
सलीका प्रज्ञा गुप्ता 145

कृतित्व

शंभु बादल : सामाजिक एवं
राजनीतिक चेतना के कवि ममता भारती 147

मोनोग्राफ

साहित्य-यौगिक के तत्व :
हृदयेश और मधुरेश धनेश दत्त पाण्डेय 151

देशकाल

विभाजन से संबंधित भारतीय साहित्य पर
एक समग्र पुस्तक जवरीमल्ल पारख 156

प्रसंग

दिनकर की साहित्य-दृष्टि : धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रवाद डॉ. अनुज 160

किताबें

पंख और प्रश्नों के बीच : सुषमा सिन्हा की
कविताओं की स्त्री-चेतना डॉ. कुमारी उर्वशी 160
'आखिरी तीर' :
पाठकों के दिल में उतरता संवेदना का तीर अनुज 164
'इंटरवल के बाद' :
अनुभव, यथार्थ और मानवीय विघटन की कथाएँ चारुमित्रा 168
'दिशाओं के बीच' :
प्रकृति को बचाने की बेचैनी सैयद परवेज 171

परिक्रमा

सुधार-संशोधन

पिछले अंक के पृष्ठ 44-47 पर छपे संतोष दीक्षित के इंटरव्यू में गलती से सवाल पूछने वाले के रूप में संतोष दीक्षित और जवाब देने वाले के रूप में चंद्रबिंद का नाम छप गया है। वास्तव में सवाल चंद्रबिंद ने पूछे थे और जवाब संतोष दीक्षित जी ने दिये थे।

इस गलती के लिए हम क्षमापार्थी हैं। पाठकों से अनुरोध है कि वे 'खलल' उपन्यास के सम्बंध में जवाब देने वाले के रूप में संतोष दीक्षित का नाम पढ़ें।

–परिकथा

आवरण-चित्र : **जयंत**, सासाराम, मो.: 7488690433
भीतरी रेखांकन : जयंत, अनुप्रिया, वंदना और लोकेश
कम्प्यूटर सच्चा : **जोशी टाइपसेटर**, म.नं. 31, गली नं. 37-बी, कौशिक इन्क्लेव, बुराड़ी-110084
मो.: 9650463001

सम्पादकीय

मिनाब की बच्चियाँ

सभी देख रहे हैं, अमेरिका-इजरायल और ईरान का युद्ध दिन पर दिन बड़ा और भीषण होता जा रहा है। यदि रूस, चीन, उत्तर कोरिया भी इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ते हैं तो यह महायुद्ध बन जायेगा और पिछले दो महायुद्धों की तुलना में ज्यादा भीषण और खौफनाक होगा।

टेलीविजन के दृश्य बता रहे हैं, ईरान, इजरायल और मिडिल ईस्ट के अमेरिका-समर्थक सैन्य ठिकाने वाले देशों में भारी तबाहियाँ और बर्बादियाँ हो रही हैं। ये बर्बादियाँ इतनी ज्यादा हैं कि इनके पुनर्निर्माण में अथाह धनराशि लगेगी। यदि युद्ध नहीं हुआ होता तो यह धनराशि उन देशों में समाज के विकास, जनता के विकास, शिक्षा-चिकित्सा, कल्याण, इंफ्रास्ट्रक्चर आदि पर खर्च हुई होती। युद्ध राष्ट्राध्यक्षों के अहं को तुष्ट करता है, जनता के हिस्से में विपन्नता देता है। इन क्षतियों और बर्बादियों में मानवीयता और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा, मानव जिंदगियों का विनाश, विश्वस्तरीय भाईचारे का लोप, सर्वस्वीकार्य वैश्विक व्यवस्था का निषेध जैसी कुछ वे क्षतियाँ भी होंगी जो ऊपर से नहीं दिखायी पड़ती हैं लेकिन वास्तव में हुई होती हैं।

सबसे पहला सवाल तो यही समझने का रहा है कि अमेरिका जैसा बड़ा देश इस युद्ध में कूदा तो क्यों कूदा। सभी जानते हैं, इजरायल और ईरान के बीच तनाव पिछले कई सालों से हैं और वे इससे निबटते रहे हैं। यह भी जानी हुई बात है कि इजरायल अमेरिका से और ईरान रूस-चीन से सामरिक सहयोग पाते रहे हैं लेकिन बाकी देश सामान्यतः एक दूरी बनाकर ही किसी-किसी पक्ष को सहयोग करते रहे हैं। अमेरिका ईरान के विरूद्ध युद्ध में सीधे कूद गया, इसकी दो व्याख्याएँ संभव हैं। एक तो यह कि इजरायल ने बहुत चालाकी के साथ अमेरिका को अपने पक्ष में समझा-बुझाकर खड़ा कर दिया। दूसरा यह कि अमेरिका खुद भी इरान के तेल भंडार में रूचि ले रहा है। लेकिन यहाँ इस सवाल का उठना भी बहुत वाजिब है कि दुनिया में तो अनेक देशों के पास तेल-भंडार हैं तो क्या ये सभी अमेरिका के हो जायें या अमेरिका जिन्हें चाहे, उन्हें बलपूर्वक ले ले? तब क्या यह साम्राज्यवाद-उपनिवेशवाद की वापसी नहीं है और इसका प्रतिरोध नहीं होगा?

दुनिया के देश अपने-अपने हितों, मान्यताओं, जरुरतों और अनुकूलताओं के हिसाब से अमेरिका-इजरायल या ईरान, किसी-किसी के पक्ष में अपनी अपनी पक्षधरता व्यक्त कर रहे हैं लेकिन इन दोनों पक्षों में से किसने किस पर आक्रमण किया है, कौन आक्रांत है और कौन आक्रमण का प्रतिरोध कर रहा है, इसका जवाब सुस्पष्ट है। पूरी